बियान

मिरगान भासा

Volume - 01, Issue - 01

October 2025

धान काटाई चो बुता भयना

आमचो लोकमन खुबे हरिक होउआत जेलदाय दसरा देउटनी (अकटुबर नोवमबर) मयना एउआय। कसनबलले हुदलीदाय धान पाकुआय। जाचो जाचो बेड़ा खाड़ा आसे। तेमन ए भाबताय, जेबे धान पाकली बलले समय ने काटने बला धरी हरिक होउआत आवरी तियार ने रउआत। जाके बेड़ा नी आय तेमन पने ए भाबुआत, धान पाकली बलले भुती जाआसिंग अछा कमाई होयदे बला तियार रउआत।

असनी होउ होउ देउटनी मयना ने धान काटलो मा होउआय। तेबे सबु लोक एके हुनके तियारा तियारी होउआत। इकाजे लोकमन एक दुसर घरे लागा लागी होउआत।

आवरी काची काची घरे काटतो बुता बाचा गेली बलले पानी मारलोर पाचे तिंचो धान खेड़ आवरी सड़ीई भीजा जाउआय। इकाजे लोकमन चो धान उसना चाउर मा होते जाउआय। कोनी कोनी लोकमन धान के नी काटा रला गुनुक तिंचो धान मंडेयामन बाचा जाउआय। हुनिकाजे धान मंडेयामन के समय रलो बेरा काटासिंग कुपा कुपी दिया रतोर आय। असन करले आमचो धान मंडेया अछा रउआय। हुनिकाजे आमके समय चो पयले तियार रतोर आय। आवरी धान कटाई चो बुता भयना के करतोर आय।

1. लोकमन धान भारा के आनतो काजे आपन आपन चो कोटारमन के चाचासिंग छुकछुका करुआत।
2. आवरी कोटार ने गोबर के पानी ने मिसावसिंग छड़ा छुड़ी पने देउआत।
3. बेड़ा बीतामन लोकमन के तियारुआत। आवरी बेड़ा चो काटलो धान के भारा बांदा घरे आनुआत।
4. फेर हुनचो पाचे भारामन के ढिला ढिला कुपामन देउआत।

बियान

मिरगान भासा

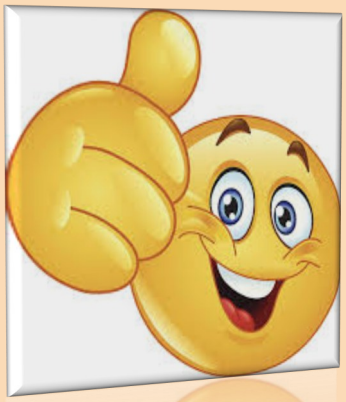

धांधा

“धाने बसलो मोची के धरी नी होए, हिरी पाली ने गोड़ खरला गेले तहरी नी होए।

भारा बांदुक जा रले भारा डराउ आय, भारा बुआसिंग हिंडते रले गोड़ पराउ आय।”

भारा बांदानी

1. जाचो घरे बेड़ा खाड़ा आसे। तेमन भारा बांदतो काजे लोकमन के तियारुआत।

2. बेट आनु लोक बेट के, बोअना लोक बोअना के धरा रउआत। मादा मादा रासी रासी लोकमन जाउआत।

3. आवरी काची घरे पने भारा बांदुक जा रले, तिंचो घरे खान पान कराउ आत।

4. आवरी ते लोक कायनिमान कुकड़ा लोक के कुकड़ा दार भाजी लोक के दार भाजी आवरी अलग अलग खान पान खुआउआत।

5. आवरी भारा बांदुक लागलो लोकमन के खुबे मानमानती करुआत। आवरी बोलुआत, भले लागलास बाबु, तुमे नी लागले नी सरती बे बोलूआत आवरी मया करुआत।

धान मिंडानी बुता

1. गांव ने लोकमन मिसासिंग धान पान के मिंडाउ आत।

2. दुय चार लोक मिसुआत। आवरी गोट दुय लोक कुपा उपरे चेगुआत आवरी कुपा धरालो भारामन के फापड़ते जाउआत।

3. आवरी बाचलो लोकमन कोड़का संगे धान सड़ई के घिचा घिचा पोकाउ आत।

4. आवरी पोकाला बलले गोटक मनुक उनडु खोटला आवरी बयलामन के जुआडु आत आवरी उनडु खोटला ने फांदुआत।

5. आवरी फांदासिंग सबु लोक कोड़का के धरासिंग धान के फाफड़ा फाफड़ा धान मिंडाव सराउआत। धान मिंडानी सरली बलले मिंडाउक लागतो लोक के तिंचो घर लोक खुबे हरिक ने खान पान खुआउ आत।

6. आवरी खादी खेला बलले ते लोकमन फापड़लो धान के सुप ने धरा उड़ावविंग बाव मारुआत।

7. आवरी पाचे आराम से धान के पाल थाने आवरी गदेया थाने सोंगाउ आत।

8. आवरी पाचे तेमन, सोंगातो एतलो धान के सोंगाउआत। आवरी बिकतो एतलो धान के बिकुक नेउआत।

गीत

धान काटते रले, हंसेया लागुआय, काय बोलासाय रे
मेरान रासी ठग लागुआय।

ठग लागले सोकार, भुती नी देए। भुती के धरा नी गेले,
मनुक झगड़ा लागुआय।

ओंय आंय पिला गागलो भुक लागली, काय बोलासाय
टोंयची दीदी हंसेया लागली। हैं हंसेया लागली - - - - -

- विजय समेल -

आमचो जीवन ने सबुले अनगर परेसानी दुई गोट चो लागी होउआय
- आमे नी भाबासिंग काम करुआंव नोअले काम नी
करासिंग भाबते रउआंव।

- जोहन बघेल -

हिन्दी, इंगलिस सबु के पड़ा, मिरगान भासा के
नी छाड़ा।

- घासीराम बघेल-